अध्याय 11

वैदेशिक सम्बन्ध

भारत की विदेश नीति : अतीत से वर्तमान तक

विश्व सम्बन्धों के मामले में भारत की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। प्राचीन भारतीय वांग्मय में भारतीय समाज ने सम्पूर्ण मानवता के समग्र विकास व हितों की रक्षा व प्रकृति प्रदत्त भेदों को नकारते हुए विश्व परिवार की अवधारणा को इस प्रकार से स्वीकार किया है।

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

इसके पीछे भारतीय समाज का यह मन्तव्य रहा है कि हितों की टकराहट का रास्ता छोड़ सबके कल्याण व सबके सुख का मार्ग अपनाये–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत।।

कालान्तर में इन्हीं श्रेष्ठ जीवन मूल्यों के मार्ग पर चल कर भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, सम्राट अशोक, विवेकानन्द आदि ने मानवता का प्रचार किया।

अपनी स्वतन्त्रता से लेकर आज तक भारत ने सदैव अन्य देशों के साथ मित्रता के सेतु बांधने का प्रयास किया है। जिसे पूरे विश्व में समर्थन भी मिला था। स्वतंत्रता–संग्राम के दौरान भी विभिन्न मंचों से भारत ने अपनी प्राथमिकताओं और आदर्शों को दोहराया है। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर भारत ने प्रारम्भ से ही अपने स्पष्ट विचार रखे हैं। भारत ने सदैव अन्य राष्ट्रों की स्वतन्त्रता की अवधारणा तथा आत्म–निर्णय के अधिकार का समर्थन किया है। साथ ही सह–अस्तित्त्व व सबके हित के लिए बने सभी अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को भारत ने समर्थन प्रदान किया है। भारत ने साम्राज्यवाद के विरूद्ध अपने रूख को स्पष्ट किया है। इस प्रकार एक राष्ट्र के रूप में स्वतंत्रता–प्राप्ति के पूर्व ही भारत ने अपनी विदेश नीति के उद्देश्य तथा आदर्श स्पष्ट कर दिए।

भारत की विदेश नीति के उद्देश्य :–

भारत की विदेश नीति में मैत्री, शान्ति एवं समानता के सिद्धान्तों को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। भारत ने सभी के साथ सहयोग एवं सद्भाव रखते हुए सुदृढ़ एवं सुस्पष्ट नीति का निरूपण किया। भारत की विदेश नीति के तीन आधार स्तम्भ हैं :– शान्ति, मित्रता और समानता।

विदेश नीति के उद्देश्यों में राष्ट्रीय हितों की पूर्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्त्व होता है। भारत सदैव ही अपने राष्ट्रीय हितों को अन्तर्राष्ट्रीय हितों के साथ समायोजित करता रहा है। हमारे मानवतावादी श्रेष्ठ आदर्श एवम् श्रेष्ठ जीवन मूल्य विदेश नीति के दीर्घकालीन आधार बने रहे हैं। इसी सुसंस्कृत विचार ने भारत की विदेश नीति को हर काल में निरन्तरता दी है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद–51 में वर्णित राज्य के नीति निदेशक तत्त्वों के अन्तर्गत भारतीय विदेश नीति के मूल तत्त्वों का समावेश किया गया है।

भारत की विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं :–

1. अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा व शान्ति के लिए प्रयत्न करना ।
2. अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थता द्वारा सुलझाना।
3. सभी राज्यों में परस्पर सम्मानपूर्ण सम्बन्ध बनाना।
4. अन्तर्राष्ट्रीय कानून में आस्था।
5. सैनिक समझौतों व गुटबन्दियों से अलग रहना।
6. उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद का विरोध।
7. रंगभेद का विरोध करना तथा अपनी स्वतन्त्रता के लिए संघर्षरत राष्ट्रों की सहायता करना।
8. सभी देशों के साथ व्यापार, उद्योग, निवेश व प्रोद्यौगिकी अन्तरण को सक्रिय व सहज बनाना।
9. अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के समक्ष आने वाली चुनौतियों के समाधान खोजने में सहयोग करना।
10. दक्षिण एशिया में मैत्री और सहयोग के आधार पर अपनी स्थिति मजबूत करना।

भारत की विदेश नीति के निर्धारक तत्त्व :—

सन् 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत के समक्ष कुछ विशेष परिस्थितियां व चुनौतियाँ थी। अतः तात्कालिक विदेश नीति के निर्धारण में इन तत्त्वों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है —

1. स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय समूचा विश्व दो विरोधी गुटों में विभाजित था। अतः भारत ने अपने आपको गुटों की राजनीति से अलग रखने का निर्णय लिया। अपना आर्थिक व सर्वांगीण विकास करना भारत की पहली प्राथमिकता थी। इसके लिए उसे विश्व के सभी देशों के सहयोग की आवश्यकता थी। इसी परिदृश्य ने गुट निरपेक्ष आन्दोलन की नयी अवधारणा की भूमिका भी तैयार की।
2. अपनी प्रतिरक्षा—व्यवस्था को सुदृढ़ कर देश की एकता व अखण्डता को बनाए रखना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण था।
3. भारत की विदेश नीति के निर्धारण में भौगोलिक तत्त्वों का अपना महत्त्व है। प्रादेशिक सुरक्षा किसी भी राष्ट्र का परम लक्ष्य होता है। एक ओर भारत पूर्व सोवियत संघ तथा साम्यवादी चीन जैसी ताकतों के समीप है। दूसरी ओर उसका दक्षिण—पूर्वी तथा दक्षिण—पश्चिमी हिस्सा समुद्र से घिरा है। अपनी सुरक्षा, शान्ति व मैत्री में ही भारत का हित निहित है।
4. भारत की विदेश—नीति के निर्धारण में अपनी प्राचीन संस्कृति का प्रभाव रहा है। विश्व—बन्धुत्व, विश्व शान्ति व मानवतावाद अतीतकाल से ही हमारे प्रेरक मूल्य रहे है। स्वतंत्रता—संग्राम के तात्कालिक भारतीय नेतृत्वकर्त्ताओं के विचारों ने भी हमारी विदेश नीति को प्रभावित किया।

भारत की विदेश नीति की मुख्य विशेषताएँ :—

(i) गुट निरपेक्षता :—

परिस्थितिवश भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के समय समूचा विश्व दो गुटों में विभाजित था। एक का नेतृत्व पूंजीवादी अमरीका कर रहा था तथा दूसरे का साम्यवादी सोवियत संघ। भारत ने अपने वैचारिक अधिष्ठान व हित के कारण दोनों गुटों के परस्पर संघर्ष से दूर रहने का निर्णय किया। गुटों की राजनीति से अलग रहकर अपने विकास पर ध्यान केन्द्रित करना, जो आगे चलकर गुटनिरपेक्षता की नीति कहलायी। यह नीति विश्व की विभिन्न समस्याओं पर स्वतंत्र व न्यायपूर्ण विचार प्रकट करती है। इस दृष्टि से यह एक सकारात्मक व रचनात्मक नीति है।

गुटनिरपेक्षता के अन्तर्गत कोई भी राष्ट्र दोनों विचारों से राष्ट्रहित में मैत्रीपूर्ण व संतुलित सम्बन्ध रखकर अपने आर्थिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। गुट—निरपेक्षता किसी भी एक गुट से सैनिक संधियों पर असहमति रखती है। दासता से मुक्त हुए भारत सहित सभी नव—स्वतंत्र राष्ट्रों के लिए इस आंदोलन ने एक नवीन मार्ग प्रशस्त किया। इस नीति का अवलम्बन करके नव—स्वतंत्र राष्ट्र अपने लिए विकास के नए आयाम खोल पाए। साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय विवादों में सही गलत के आधार पर निर्णय लेने के लिए एक तीसरे मंच का आविर्भाव भी हुआ।

गुट निरपेक्षता को एक आन्दोलन का रूप देने में भारत के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू, यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति मार्शल टीटो, मिस्र के राष्ट्रपति नासिर तथा इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण की व्यापक भूमिका रही। पाँचवे एवम् छठे दशक में इस आन्दोलन ने एक व्यवस्थित रूप प्राप्त कर लिया था।

सन् 1961 में आयोजित बेलग्रेड शिखर सम्मेलन में शान्ति एवम् निःषस्त्रीकरण पर बल दिया गया। इसका सोलहवां शिखर सम्मेलन, अगस्त 2012 में ईरान की राजधानी तेहरान में सम्पन्न हुआ। इसमें 120 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें परमाणु निःशस्त्रीकरण, मानवाधिकार व क्षेत्रीय मुद्दों पर व्यापक चर्चा हुई।

शीत युद्ध की समाप्ति तथा सोवियत संघ के विघटन के बाद गुट निरपेक्ष आन्दोलन की उपयोगिता व प्रासंगिकता पर सवाल उठते रहे हैं परन्तु यह कहा जा सकता है कि नवीन चुनौतियों व समस्याओं के समाधान के प्रयासों ने संगठन की प्रासंगिकता को बनाये रखा है। इस आन्दोलन ने नव—उपनिवेशवाद, मानव— अधिकार, पर्यावरण, आर्थिक व क्षेत्रीय सामाजिक जटिलताओं जैसे नवीन क्षेत्रों में अपना विस्तार करके अपनी महत्ता को सिद्ध कर दिया है।

(ii) पंचशील :—

पंचशील गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित बौद्ध धर्म के पाँच व्रतों का पारिभाषिक शब्द है। पंचशील से तात्पर्य है आचरण के पाँच सिद्धान्त। पंचशील को विदेश—नीति के सन्दर्भ में

सर्वप्रथम 29 अप्रेल 1954 को तिब्बत के सम्बन्ध में भारत और चीन के बीच हुए एक समझौते में प्रतिपादित किया गया। एशिया के प्रायः सभी देशों ने पंचशील के सिद्धातों को अपनाया। कालान्तर में इस सिद्धान्त को विश्वस्तरीय पहचान प्राप्त हुई। ये पाँच सिद्धान्त इस प्रकार है :–

1. अनाक्रमण की नीति।
2. एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और सर्वोच्च सत्ता के लिए सम्मान।
3. समानता एवं पारस्परिक लाभ।
4. एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना ।
5. शान्तिपूर्ण – सह अस्तित्व ।

पंचशील के सिद्धान्त नैतिक शक्ति के प्रतीक है। पंडित नेहरू ने एक बार कहा था कि यदि इन सिद्धान्तों को सभी देश मान्यता दे दें तो आधुनिक विश्व की अनेक समस्याओं का समाधान मिल जाएगा। प्रारम्भ में पंचशील को विश्व में भारतीय विदेश नीति की महान् उपलब्धि माना जाता था परन्तु 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर यह सिद्ध कर दिया कि पंचशील एक भ्रान्ति है। इस आक्रमण से भारत की विदेश नीति व वैश्विक प्रतिष्ठा को भारी आघात लगा। आलोचकों ने इसे भारत की कूटनीतिक पराजय माना। पंचशील के सिद्धान्तों में भारत का विश्वास आज भी है लेकिन वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में वैचारिक व नैतिक प्रतिबद्धता के अभाव के चलते इसकी व्यापक सफलता के अवसर सीमित प्रतीत होते हैं।

(iii) शान्तिपूर्ण – सह–अस्तित्व

भारतीय दर्शन में सदैव वसुधैव कुटुम्बकम् का समर्थन किया गया है। इसका तात्पर्य विभिन्न धर्मों तथा सामाजिक व्यवस्थाओं वाले देशों के साथ शान्तिपूर्वक सहअस्तित्व में बने रहना है। शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व वस्तुतः पंचशील के सिद्धान्तों का ही विस्तार है। भारत ने अपनी विदेश नीति के माध्यम से परस्पर विरोधी विचारधाराओं वाले राष्ट्रों को मैत्रीपूर्वक रहने का सन्देश दिया है। भारत ने स्वयं भी अधिकाधिक मैत्री सन्धियां व व्यापारिक समझौते किए हैं। यह नीति रचनात्मक विकास की आधारशिला है। भारत प्रारम्भ से ही युद्ध का विरोधी एवम् शान्ति व उसके लिए आवश्यक निःशस्त्रीकरण का समर्थक रहा है। युद्ध की सम्भावनाएं बनने पर भारत ने अनेक बार मध्यस्थ की भूमिका निभाई है। वर्तमान में विश्व में कई देशों के पास आणविक शक्ति है। अर्द्ध विकसित व पिछड़े राष्ट्रों के विकास हेतु शान्ति का वातावरण अनिवार्य है। वास्तव में शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को दृढ़ तथा कुशल व्यावहारिक आधार प्रदान कर सकता है।

(iv) साम्राज्यवाद तथा रंगभेद का विरोध

भारत स्वयं साम्राज्यवाद का शिकार रहा है। वह उसके दुष्परिणामों को अनुभव कर चुका है। इसलिए समूची दुनिया में साम्राज्यवाद के किसी भी रूप का वह प्रबल विरोध करता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत ने एशिया तथा अफ्रीका के उन सभी राष्ट्रों का समर्थन किया जो अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्षशील थे। भारत सभी लोगों के लिए आत्म निर्णय के अधिकार का समर्थन करता है। वह साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद को शोषण का साधन मानता है। साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद का विरोध भारतीय विदेश नीति के प्रारम्भिक आदर्शों में है जिसके माध्यम से प्रारम्भ से लेकर अब तक भारत ने शोषण के खिलाफ संघर्षशील राष्ट्रों का मनोबल बढ़ाने का कार्य किया है।

इसी प्रकार नस्लीय भेदभाव व रंगभेद का विरोध भी भारतीय विदेश–नीति की विशेषता रही है। भारत विश्व की सभी मानव नस्लों व प्रजातियों की समानता का पक्षधर है तथा नस्ल व रंग के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव का प्रबल विरोध करता है। प्रजातीय विभेद समानता की अवधारणा के प्रतिकूल है तथा अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण को दूषित करता है। नस्ल भेद के विरोध स्वरूप ही भारत ने भूतकाल में दक्षिण अफ्रीका के साथ अपने कूटनीतिक सम्बन्ध का विच्छेद कर लिया। अमरीका के नीग्रो और रोडेशिया के अफ्रीकी लोगों का भी भारत ने खुलकर समर्थन किया। इस नस्लवाद व रंगभेद की नीति पर चलने वाले देशों के विरूद्ध कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगाने में सहयोग किया। भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से भी अपनी इस नीति को मुखर स्वर प्रदान किया।

(v) संयुक्त राष्ट्रसंघ का समर्थन

भारत संयुक्त राष्ट्रसंघ का प्रारम्भिक सदस्य रहा है। तब से लेकर आज तक वह इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की नीतियों

व कार्यों का समर्थन करता आ रहा है। संयुक्त राष्ट्रसंघ विश्व शान्ति हेतु स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत है। भारत ने हमेशा ही इसके आदेशों व अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों की अनुपालना की है।

भारत–पाक विवाद पर भी भारत ने तत्काल ही संयुक्त राष्ट्रसंघ के निर्णयों की पालना की है। इससे भारत की इस संगठन के प्रति निष्ठा व प्रतिबद्धता सिद्ध हो जाती है। अनेक भारतीयों ने संयुक्तराष्ट्र में उच्च पदों को सुशोभित कर अपने देश का गौरव बढ़ाया है। आवश्यकता पड़ने पर भारत ने इसे अपनी शान्ति सेना भी प्रदान की है। वर्तमान में भारत सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए प्रयत्नशील है।

(vi) भारत की आणविक नीति

सन् 1960 के बाद से भारत ने अपनी परमाणु नीति को रूप देना प्रारम्भ किया। यह देश हित में आवश्यक हो गया था। इस समय परमाणु निःशस्त्रीकरण की आड़ लेकर अमेरिका, रूस व चीन जैसे परमाणु सम्पन्न राष्ट्र भारत को कमजोर बनाना चाहते थे। भारत के पूर्व राष्ट्रपति दिवंगत डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम भारत के परमाणु कार्यक्रम के सूत्रधार माने जाते हैं। उनका कथन था कि भारत दो परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों के बीच स्थित है। भारत की सुरक्षा को संकट स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा था। अतः परमाणु शस्त्र व प्रक्षेपास्त्र के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना समय की मांग थी। भारत प्रारम्भ से ही शान्तिप्रिय देश रहा है तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसने निःशस्त्रीकरण का समर्थन किया है परन्तु तेजी से बदलते विश्व–परिदृश्य व भेदभावपूर्ण परमाणु कार्यक्रमों ने भारत को इस विषय पर आत्मनिर्भर होने के लिए प्रेरित किया। परमाणु निःशस्त्रीकरण तथा परमाणु अप्रसार संधियों की शर्तें भेदभाव पूर्ण होने के कारण भारत को स्वीकार नहीं थी। परमाणु परीक्षण के मामले में भारत आधारभूत नीति का पालन कर रहा है।

भारत ने अपना प्रथम परमाणु परीक्षण 1974 में पोकरण में किया। 24 वर्ष के अन्तराल के पश्चात् 1998 में भारत ने अपना दूसरा परमाणु परीक्षण किया। भारत की आणविक नीति पर पांचों परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। भारत ने बार–बार स्पष्ट किया है कि वह परमाणु शस्त्र–विहीन संसार के लिए वचनबद्ध है परन्तु जब तक अन्य परमाणु सम्पन्न राष्ट्र अपने अस्त्र नष्ट नहीं करते, भारत न्यूनतम सुरक्षात्मक परमाणु अस्त्र रखेगा। जब तक व्यापक परमाणु परीक्षण संधि भेदभाव रहित नहीं की जाती, भारत इस पर हस्ताक्षर नहीं करेगा।

(vii) सार्क

सार्क (दक्षेस) का पूरा नाम है South Asian Association For Regional Co-Operation (SAARC) अर्थात् दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ है। दक्षिण एशिया के सात देशों ने मिलकर इसकी स्थापना की। ये सात देश है भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, म्यानमार, श्रीलंका, और मालदीव। सार्क की स्थापना दिसम्बर, 1985 में हुई । यह दक्षिण एशिया के सात पड़ौसी देशों के क्षेत्रीय सहयोग के उद्देश्य से स्थापित संगठन है। यह संगठन आपसी तनाव को कम करने व सद्भाव बढ़ाने पर बल देता है। इन देशों में गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण तथा विकास जैसे विषयों पर आपसी सहयोग की अनेक संभावनाएं हैं। मालदीव को छोडकर शेष सभी देश भारतीय उपमहाद्वीप के हिस्सें है। इस नाते सभी देश ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विरासत साझा करते हैं। सार्क ने कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण जैसे आधारभूत क्षेत्रों में प्रभावी कार्य किए हैं।

भारत दक्षिण एशिया में प्रभावशाली स्थान रखता है। सभी दक्षेस देशों की सीमाएं भारतीय सीमा से किसी न किसी रूप से जुड़ी हुई है। दक्षेस राष्ट्रों की सभी नदियां भारत से होकर बहती हैं। सभी मसलों पर भारत की ओर उम्मीद की दृष्टि लगी रहना स्वाभाविक है।

अप्रैल 2007 में सार्क का 14 वां शिखर सम्मेलन नई–दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इसमें अफगानिस्तान को सार्क का आठवां सदस्य बनाया गया। साथ ही इसमें विश्व के कई देशों के प्रतिनिधि पर्यवेक्षक के रूप में सम्मिलित हुए। इससे सार्क के प्रति दूसरे देशों की जिज्ञासा प्रकट होती है। नवम्बर 2014 में सार्क का 18 वां शिखर सम्मेलन नेपाल में सम्पन्न हुआ। इस संगठन का 19 वां शिखर सम्मेलन पाकिस्तान में 2016 में आयोज्य है।

(viii) आतंकवाद की समस्या

आज सम्पूर्ण मानवता आतंकवाद से त्रस्त है। पिछड़े और विकासशील देश तो इसकी गिरफ्त में हैं ही, समृद्ध व

शक्तिशाली देश भी इस खतरे से अछूते नहीं है। विधि सम्मत सरकार के विरूद्ध हिंसात्मक कार्यवाही करना तथा जनता को भयभीत करना आतंकवाद है। हिंसा की धमकी, व्यक्तिगत हिंसात्मक कृत्य और लोगों को आतंकित करना आतंकवाद है। भारत सहित दक्षिण एशियाई देश तो इस समस्या से जूझ ही रहे हैं, अमेरिका भी इसका अपवाद नहीं है।

आतंकवाद भारत के लिए एक गम्भीर चुनौती है। भारत में वर्तमान में लगभग 31 प्रमुख उग्रवादी संगठन सक्रिय है। इनमें से कुछ ने पाक अधिकृत कश्मीर और अफगानिस्तान में अपने अड्डे बना रखे हैं। इनके अलावा एशिया और विश्व के अन्य स्थानों पर भी आतंकवादी संगठनों के ठिकाने मौजूद है।

जम्मू–काश्मीर तथा देश के अन्य भागों में विघटनकारी घटनाओं को अंजाम देने का काम यही आतंकवादी कर रहे है। दिसम्बर 2001 में भारतीय संसद पर जैश–ए–मोहम्मद और लश्कर–ए–तोयबा के आंतकवादियों ने हमला कर दिया था।

विदेशी आतंकवादी संगठनों द्वारा प्रायोजित यह छाया युद्ध भारत के लिए एक बड़ी समस्या है। आतंकवाद राज्य एवम् समाज के विषैले चरित्र और बीमार मानसिकता की उपज है। इसका राज्य प्रायोजित रूप अत्यन्त भयावह है। इसके अन्तर्गत विश्व के कई राज्य अपने स्वार्थी हितों की पूर्ति के लिए खुलेआम आतंकवाद और आतंकवादी संगठनों को शह एवं प्रश्रय दे रहे हैं। इन संगठनों के पास अत्याधुनिक हथियार, विस्फोटक, वित्त व अन्य सभी संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

अनगिनत वार्ताओं व सम्मेलनों में चर्चा के बावजूद आतंकवाद की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। इससे प्रभावित देशों में शान्ति और परस्पर विश्वास तो खण्डित हुआ ही है, आर्थिक संसाधनों की भी बर्बादी हुई है। अच्छा हो, आने वाला समय आतंकवादी गतिविधियों से मुक्त हो तथा इस अथाह धनराशि का प्रयोग जनता के विकास की ओर उन्मुख करने का मार्ग प्रशस्त हो।

भारत की विदेश नीति का मूल्यांकन

भारतीय विदेश नीति प्रायः अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करने में समर्थ रही है। साथ ही उच्च मानवीय मूल्यों पर आधारित होने के कारण इसे गौरवशाली भी माना जाता है। हालांकि यदा–कदा अपने सैनिक एवम् आर्थिक हितों को लेकर यह आलोचना का शिकार भी हुई है तथापि हम कह सकते हैं कि विश्व के बदलते परिदृश्य व समय की माँग के अनुसार इसने अपने आपको परिवर्तित भी किया है। यही कारण है कि इसमें एक निरन्तरता व गत्यात्मकता देखी जा सकती है।

भारत ने अब अपने आर्थिक पहलू को महत्त्व देना प्रारम्भ कर दिया है। व्यापार एवम् वाणिज्य पर अपनी रणनीति को लेकर भारत गम्भीर है। भारत–अमेरिका सम्बन्धों में व्यापक सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। 2010 तथा पुनः 2015 में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा की भारत यात्रा से दोनों देशों के बीच बदलाव के संकेत दिखाई देते हैं। दक्षिण एशिया तथा विकासशील देशों के नेतृत्व की भूमिका भी भारत की विदेश नीति में आए सकारात्मक बदलाव की ओर इशारा करती है। भारत के आणविक परीक्षणों ने अणुशक्ति पर पश्चिमी देशों व चीन के एकाधिकार को तोड़ दिया है। यह सिद्ध करता है कि एक तरफ भारत की विदेश नीति शान्ति और सद्भाव के प्रति वचनबद्ध है तो दूसरी तरफ अपने हितों की पूर्ति करने में भी समर्थ एवं सक्षम है। भारत की विदेश नीति ने उसकी सांस्कृतिक पहचान को भी विस्तार दिया है। भारतीय कला, भोजन, वेशभूषा, संस्कृति आदि को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान मिली है। वस्तुतः विगत दो दशकों में भारत ने आर्थिक एवम् तकनीकी प्रगति की है। अपनी गत्यात्मक विदेश–नीति के कारण ही आज भारत को नई वैश्विक भूमिका प्राप्त हुई है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. भारत की विदेश नीति अतीत से लेकर वर्तमान तक, गौरवशाली परम्पराओं को अभिव्यक्त करती है। विश्व–शान्ति, मैत्री, विश्व–बन्धुत्व एवम् सहयोग जैसे श्रेष्ठ आदर्श इसके प्रमुख आधार स्तम्भ रहे हैं।
2. भारत की विदेश नीति का प्रमुख उद्देश्य अपने राष्ट्रीय हितों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय हितों का समायोजन करना है।
3. भारत की विदेश नीति के प्रमुख निर्धारक तत्त्वों में तत्कालीन परिस्थितियाँ, भौगोलिक तत्त्व एवं विचारधारा का प्रभाव उल्लेखनीय है।
4. गुट निरपेक्षता भारत की विदेश नीति की एक प्रमुख विशेषता है। इसका तात्पर्य है कि तत्कालीन गुटों की

राजनीति से अपने आप को अलग रख कर अपने देश के विकास पर ध्यान देना।

5. भारत ने पंचशील के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जिसके अन्तर्गत अनाक्रमण की नीति अपनाना, एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता का सम्मान, समानता, अहस्तक्षेप की नीति तथा शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व सम्मिलित हैं।
6. भारत रंग अथवा जाति–प्रजाति के आधार पर भेदभाव करना समानता के सिद्धान्त के प्रतिकूल मानता है, अतः भारत नस्लवाद व रंगभेद का विरोध करता है।
7. अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति व बन्धुत्व को बनाए रखने के लिए भारत अन्तर्राष्ट्रीय संगठन संयुक्त राष्ट्रसंघ का समर्थन करता है।
8. विश्व के बदलते हुए परिदृश्य एवं परमाणु निःशस्त्रीकरण पर परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों की भेदभावपूर्ण नीति से क्षुब्ध होकर भारत ने अपने परमाणु कार्यक्रम को नया रूप प्रदान किया है।
9. दक्षिण एशिया के सात देशों द्वारा मिलकर दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क) की स्थापना दिसम्बर 1985 में की गई।
10. आतंकवाद की समस्या भारत के लिए एक गम्भीर चुनौती है।
11. भारत ने अपना रूख स्पष्ट करते हुए कठोर कदम उठाए हैं परन्तु निकट भविष्य में इसका समाधान दिखाई नहीं दे रहा है

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गुट निरपेक्ष आन्दोलन का बेलग्रेड़ शिखर सम्मेलन किस वर्ष में आयोजित किया गया था?

   (क) 1963 (ख) 1961

   (ग) 1953 (घ) 1958

2. पंचशील के पाँच सिद्धान्त मूलतः किसके दर्शन पर आधारित हैं ?

   (क) महावीर स्वामी (ख) स्वामी विवेकानन्द

   (ग) स्वामी दयानन्द (घ) गौतम बुद्ध

3. पंचशील को भारत–चीन समझौते के अन्तर्गत किस वर्ष लागू किया गया ?

   (क) 1950 (ख) 1954

   (ग) 1955 (घ) 1960

4. सार्क का 18 वां शिखर सम्मेलन किस देश में सम्पन्न हुआ ?

   (क) भारत (ख) पाकिस्तान

   (ग) नेपाल (घ) भूटान

5. भारत ने अपना प्रथम परमाणु परीक्षण किस वर्ष में किया?

   (क) 1984 (ख) 1974

   (ग) 1975 (घ) 1980

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. भारत की विदेश नीति के प्रमुख आधार स्तम्भ क्या हैं ?
2. भारत की विदेश नीति के उद्देश्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्त्व क्या हैं ?
3. भारतीय विदेश नीति के मूल तत्वों का समावेश संविधान के किस अनुच्छेद में किया गया है ?
4. गुटनिरपेक्षता को आन्दोलन का रूप देने में किन नेताओं की प्रमुख भूमिका रही है ?
5. सार्क (दक्षेस) का पूरा नाम बताइये ?
6. भारत की परमाणु नीति के सूत्रधार कौन है ?
7. विश्व शान्ति के लिए भारत किस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का समर्थन करता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. भारत की विदेश नीति के प्रमुख आदर्श बताइये ?
2. गुटनिरपेक्षता की नीति से क्या अभिप्राय है ?
3. भौगोलिक तत्त्व विदेश नीति को किस प्रकार प्रभावित करता है? बताइये।
4. शीत–युद्ध की समाप्ति के बाद गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।
5. पंचशील के सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।

6. शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व से आप क्या समझते हैं? बताइये।
7. भारत में आतंकवाद की समस्या पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
8. संयुक्त राष्ट्रसंघ के परिप्रेक्ष्य में भारत की भूमिका का विवेचन कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. भारत की विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्य बताइये।
2. भारत की विदेश नीति के निर्धारक तत्त्वों का वर्णन कीजिए।
3. भारत की विदेश नीति की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. भारत की परमाणु नीति का विवेचन कीजिए।
5. भारत की विदेश नीति का मूल्यांकन कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1. (ख) 2. (घ) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख)